Date > 16.11.2017 (सन्मार्ग)

## 'गॉड टॉक्स विथ अर्जुना' के हिंदी रूपांतरण का लोकार्पण, बोले राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद

# टीका में आध्यात्म से अंतर्द्वंद्वों पर जीत की चर्चा

संवाददाता

रांची : राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने परमहंस योगानंद की गीता पर अंग्रेजी में लिखी टीका 'गॉड टॉक्स विद अर्जुना' के हिंदी रूपांतरण का लोकार्पण बुधवार को योगदा सत्संग आश्रम में किया। योगदा सत्संग की आध्यात्मिकता के सौ वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुये राष्ट्रपति ने कहा कि स्वामी परमहंस योगानंद ने गीता पर लिखी टीका में गीता के मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक पक्ष को रखा है। परमहंस के अनुसार गीता दैनिक जीवन की पाठ्य पुस्तक नहीं, बल्कि जीवन रूपी कुरुक्षेत्र की लड़ाई है, जिसे हमें खुद लड़ना और जीत हासिल करना है। सही क्या है, गलत क्या है, यह अंर्तद्वंद सभी को परेशान करता है। यह विवेक केवल आध्यात्मिकता से आता है, जिसकी चर्चा भगवान कृष्ण ने गीता में की है। राष्ट्रपति ने कहा कि यह संयोग है कि जब स्वामी विवेकानंद 1893 में शिकांगो सम्मेलन में पश्चिमी देशों में जागृति की नयी लहर पैदा कर रहे थे, उसी वर्ष परमहंस योगानंद का यूपी के

गोरखपुर में मुकुंद लाल घोष के नाम से अवतरण हुआ, परमहंस की जन्मस्थली मेरी भी मातृभूमि है। उन्होंने कहा कि गीता पर टीका को परमहंस योगानन्द 'आत्म-साक्षात्कार का राजयोग विज्ञान' कहते हैं और आत्म-साक्षात्कार को गीता का उद्देश्य मानते हैं। राजयोग इस उद्देश्य को प्राप्त करने की पद्धति है। स्वामी विवेकानंद और परमहंस योगानन्द ने राजयोग पर विशेष जोर दिया था। राजयोग की वैज्ञानिकता के कारण पश्चिम के लोगों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ा। आज की युवा पीढ़ी के लिए भी राजयोग अधिक उपयुक्त लगता है। अंग्रेजी में लिखी टीका का स्पैनिश, जर्मन, इटालियन और पुर्तगाली भाषा में भी रूपांतरण किया जा चुका है।

राष्ट्रपति ने कहा कि स्वामी विवेकानंद और योगानंद परमहंस राजयोग पर विशेष बल दिया करते थे। उन्होंने योगानंद आत्मसाक्षात्कार को गीता का उद्देश्य मानते हैं और राजयोग इस उद्देश्य को प्राप्त करने की पद्धति है। उन्होंने कहा कि स्वामी योगानंद की आध्यात्मिक संदेश है, जो सभी धर्मों का सम्मान करने और विश्वबंधुत्व का संदेश देनेवाला है। योगानंद परमहंस मानते हैं कि जिस तरह रोशनी, हवा और पानी सबके लिए हैं, उसी तरह ऋषि-मुनियों द्वारा विकसित किया गया भारत का योग-विज्ञान भी पूरी मानवता के लिए है। गीता में भारत का यही योगशास्त्र कृष्ण और अर्जुन के संवाद के रूप में समझाया गया है। राष्ट्रपति ने कहा कि मैटरियलिज्म और कंप्टीशन से घिरी युवा पीढ़ी पर भी परमहंस योगानन्द का गहरा प्रभाव है। कड़े संघर्ष के बीच विश्वस्तरीय सफलता और समृद्धि हासिल करने वाले नवयुवकों को 'अ ऑटोबायोग्राफी ऑफ योगी' नामक पुस्तक को सफलता का श्रेय देते हैं। यह पुस्तक उन्हे जीवन में आगे बढ़ने का सही रास्ता दिखाती है। सत्तर साल पहले प्रकाशित और लगभग 45 भाषाओं में अनुवादित यह पुस्तक, जिसे दुनिया के लगभग 90% लोग अपनी भाषा में पढ़ सकते हैं, आज भी उतनी ही लोकप्रिय है। उन्होंने आश्रम की ओर से लोगों के चल रहे ध्यान केंद्रों द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, प्राकृतिक आपदाओं से राहत, अनाथ बच्चों के लालन-पालन तथा कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिए सराहना की।

कार्यक्रम में आश्रम के महासचिव स्वामी स्मरानन्द गिरी ने कहा कि परमहंस योगानंद ने अपनी जीवनशैली और शिक्षा से लोगों को योग के जरिये आंतरिक और बाह्य जीवन में परिवर्तन का मार्ग बताया। उन्होंने कहा कि इससे आनंद, संतोष और सुरक्षा प्राप्त होता है, जिसके लिए मानव बेचैन है। उचित कार्य और अच्छा व्यवहार से बाह्य जीवन भी सुंदर होता है। योगदा सत्संग सोसायटी और सेल्फ रियलाइजेशन के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद ने कहा की आध्यात्मिक सोच लोगों को जोड़ती, तोड़ती नहीं है। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म के तत्वों को भारत के ऋषि और गुरूओं के चिंतन के तत्व को पूरे विश्व में परमहंस योगानंद ने फैलाने का कार्य किया। कार्यक्रम में राष्ट्रपति को शॉल ओढाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू, मुख्यमंत्री रघुबर दास, पूर्व सीएम अर्जुन मुंडा समेत कई गणमान्य उपस्थित थे।